श्रीनिवास रथ द्वारा रचित 'कतमा' कविता।

श्रीनिवास रथ द्वारा रचित **'कतमा'** कविता **'तदैव गगनं सैव धरा'** नामक काव्य संग्रह से गृहीत है। सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना से पूरित यह कविता भारत में आपातकालीन (1971 ईस्वी) जन सामान्य की दशा को बयान करती है। जहां देखो वहीं सर्वत्र अंधकार का साम्राज्य है।

ऐसे में सूरज के दर्शन भी मुश्किल होते हैं। सूरज को देखने, उसका सम्मान करने की हिम्मत कौन करे ? हर तरफ झूठ-फरेब, जालसाजी, चोरी-चपाटी, छीना-झपटी, लूटमार मचा हुआ है। हर कोई येन-केन-प्रकारेण स्वार्थ सिद्धि में लगा हुआ है। सही राह पर चलने का उत्साह किसी में नहीं है और सही बात बोलने की हिम्मत भी कोई नहीं कर पा रहा है।

मानव के साथ-साथ प्रकृति पर भी इसका प्रभाव दिखाई देता है। तालाब नदियां इत्यादि जो जल से भरी होती थीं। वर्षा नहीं होने से वे सूख गयी हैं। पेड़-पौंधों और वनस्पतियों में फूल नहीं खेल रहे हैं। उन पर भौंरे नहीं मंडरा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो भौरों के गुंजन पर प्रतिबंध लग गया है।

इस कारण वे मौन हो गए हैं। भारत की प्रतिकूलता के कारण नदियाँ समुद्र कैसे हों ? जलधारण कर वे कैसे सौभाग्यशालिनी हों। हर काम में, हर क्षेत्र में प्रतिबंध लग गया है मानो मानवता दबी-कुचली जा रही है। मनुष्य की सामाजिकता सिमटती जा रही है। सरकार के अविवेकपूर्ण निर्णय से सामान्य जनता इतना आहत हो गयी है कि वह अपने सामान्य कार्य भी नहीं कर पा रही है। नीति के मार्ग पर चलने वालों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। भय की वजह से मानवता यदि दब जाए तो सामाजिकता ही समाप्त हो जाएगी।

ऐसी त्रासद स्थिति में संस्कृति ही समाप्त होने को है। यदि संस्कृति मिट गयी तो आध्यात्मिक सुख लोगों को कहां से मिलेगा ? जब व्यक्ति का चित्त शांत, प्रफुल्लित रहता है तभी उसे बाकी(बाहरी-भीतरी) बातें सुहाती हैं। ऐसी स्थिति में आध्यात्मिकता की बातें, वेदो की रहस्यमयता और बुद्ध के उपदेश और उनकी करुणा भला किसे अच्छी लगेगी। यह सारी बातें इतिहास के पन्नों पर ही कथा-कहानी बनकर रह जाएगी। नैतिकता की बातें जीवन में, आचरण में उतारने की बात तो दूर उसे सुनने का भी धैर्य किसी को नहीं हैं। अंत में प्रोफेसर रथ कहते हैं। मनुष्यों, बताओ, ऐसी कौन-सी कविता रची जाए जो तुम्हें सही मार्ग पर चलने हेतु प्रेरित करें। तुम्हारे भावों-विचारों की रक्षा हो और तुम विपरीत परिस्थिति में भी धैर्य पूर्वक आगे बढ़ते रहो, नैतिक बने रहो।

कतमा कविता

१. वद रे!.....धरा विकला ।(In Book)

अरे! बोलो इस अंधकार में कौन सी कविता, तुमको राह दिखाएं? कथा संताप की जगजाहिर, तुम इतने बेसुध तुमको समझ ना आयी, प्रतिबंध लग गया मेघों पर, सारी धरती बेबस विकल ।

व्याख्या- कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि जब आपातकालीन जैसी स्थिति हुयी थी तब सब जगह अंधकार ही अंधकार था । ऐसे अंधकार में कौन सी कविता(अर्थात् **कतमा**) तुमको राह दिखायेगी । जब मनुषों पर प्रतिबंध लग गया तो प्रकृति भी प्रतिबंधित सी हो गयी । क्योंकि मेघ भी कोई प्रतिक्रिया नहीं कर रहें और सम्पुर्ण धरती बेबस सी हो उठी हो । कुछ भी नही कर पा रही तब ऐसे समय पर कौन सी कविता तुमारी इस वेदना को कम करेगी ।

२. तमसा.....मौनमलं विकला । (In Book)

प्रबल तमस में सब जब सारा भुवन घिरा हो, तब सूरज को कोई क्या देखें, कैसे सम्मान करें ? उजड़ गयीं तब पुष्पलतायें फूलों के खिलने की बात भी जाती रही है, विपदा में घिरती यह भौरों की पाँत बैठी है बेचैन साध कर मौन ।

व्याख्या- यह सारा संसार(**भुवन**) जन अत्यधिक(**प्रबल**) अंधकार(**तमस**) से घिरा हो तब सूरज को भी नही देख पा रहे । जब न कोई सूर्य का प्रकाश हो, न बादलों से गिरता जल हो तब मानो सारी पुष्पलतायें ही नष्ट हो गयी हों तब पुष्प खिलने की पिर बात ही कैसे हो ? अर्थात् पुष्प पुष्प लताओं पर खिलते हैं और जब लतायें ही नष्ट हो जाये तो पुष्प कैसे खिलेंगे । और जब पुष्प ही नही रहेंगे तो भौंरों का क्या होगा । भौंरों की पंक्तियाँ भी मानो बैचेन होते हुये भी मौन बैठ रखी हों ।

३. सरितोऽपि.....कथाऽवसिता । (In Book)

प्रतिकूल दैव की मारी नदियां भी निज जलसंधारण किस विधि कहीं, करें ? अविवेक आहत अपार साधन जननिति के पथ पर विपदा ही बरसाते । यदि मानवता दब गयी भय संत्रास भार के नीचे, तो वहीं सिमट गयीं समझो सामाजिकता की सब बातें ।

व्याख्या- नदियां भी मानो भाग्य से मारी गयी हैं अर्थात् नदियों में भी जल नही है। जब जल न हो तो मानव जाति कैसे जिवित रहेगी। ऐसे में मानवता भी मानो इस आपदा के भार से दब जायेगी और समाज नष्ट हो जायेगा। जब मानव, समाज न रहे तो मानवता और समाजिकता की सब बाते भी समाप्त हो जायेंगी।

४. विलयं.....वृथा भवति। (In Book)

संस्कृति ही मिट गयी अगर, तो मिले जनता को सुख आध्यात्मिक कितना कैसे ? वेदों की गुरुता बोलो कहां खो गयी ? कैसे खो गयी करुणा तथागत बुद्ध वचन की ? इतिहास में अंकित तुम्हारी नैतिकता हो जाएगी व्यर्थ बनकर कथा परिहार की।

व्याख्या- जब संस्कृति समाप्त हो जायेगी तब आध्यात्म की बात कहाँ से होगी ? वेदों का कोई महत्व नही रह जायेगा, महात्मा बुद्ध के उपदेश का पालन कौन करेगा ? इतिहास में जो नैतिकता की बातें वर्णित हैं मानो वह व्यर्थ सी हो जायेगी।

५. प्रतिमां.....कुरुताम्। (In Book)

प्रतिमा के प्रति भाव जनमानस का अति विपरीत ना हो जावे ? अरे! बोलो इस अंधकार में कौन सी कविता तुमको राह दिखाएं ?

भावार्थ- श्रीनिवास रथ कहते हैं कि अरे! बोलो, इस आपातकाल में कौन-सी कविता आपका मार्गदर्शन करे। इस समय हर कार्य पर, हर क्षेत्र में प्रतिबंध लगा दिया गया है। अंधकारपूर्ण स्थान में जैसे दीपक की लौ वस्तु को आलोकित कर देती है उसी प्रकार कविता भी सहृदयों, सन्तप्तों का पथ प्रदर्शन करती है। परंतु इस आपातकाल में व्यक्ति इतना डरा सहमा एवं दबा हुआ है कि वह खुलकर कुछ बोल भी नहीं सकता है। अपने भावों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी उसे नहीं है। व्यक्ति तो व्यक्ति, चेतन बादल भी प्रतिबंधित जान पड़ता है। धरती फट रही है, विवर दिखाई दे रहे हैं।बादल उमड़-घुमड़कर रह जाते हैं, बरसते नहीं हैं। यह बेबस-सा प्रतीत होता है मानो उसे बरसने से कोई रोक रहा हो, उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया हो। प्रकृति प्रदत वस्तुएँ भी मिलनी मुश्किल हो गयी हैं।